लघु णमोकार मंत्र विधान
माण्डला

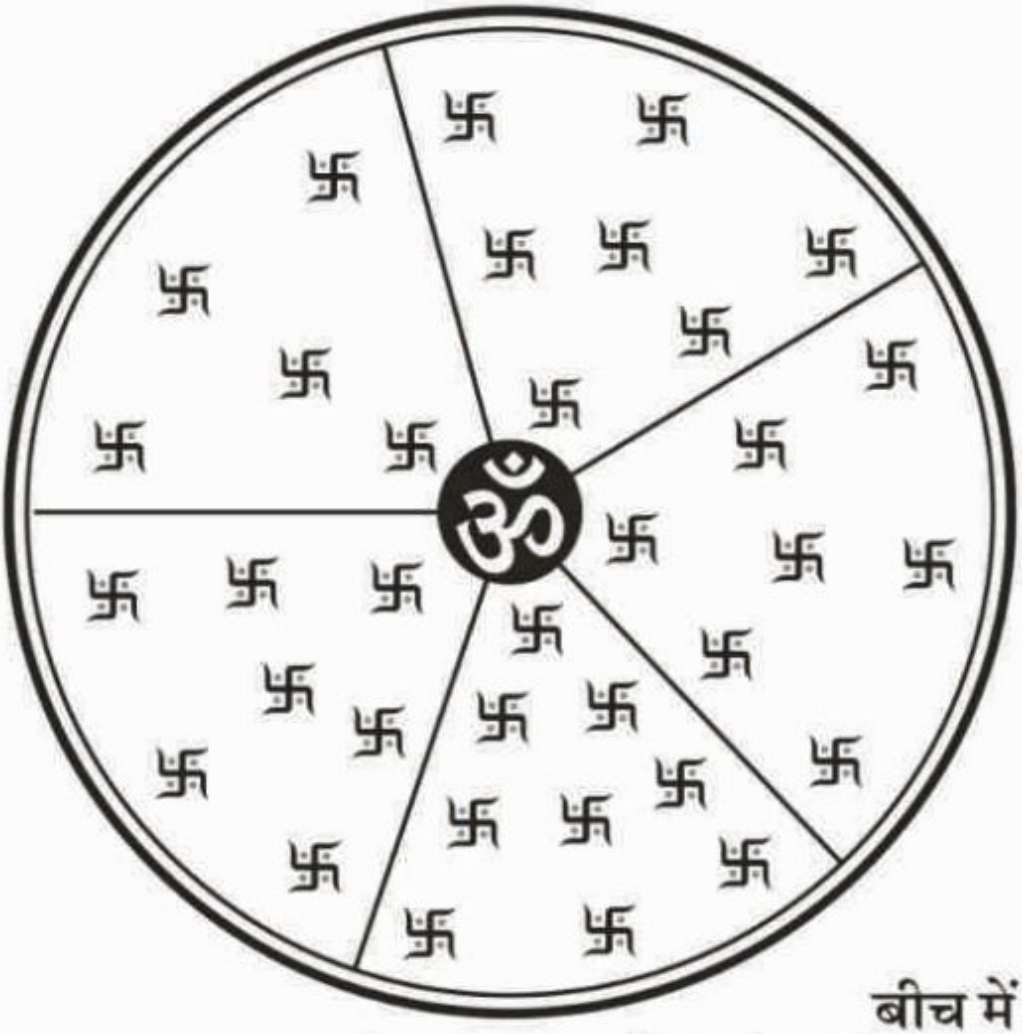

बीच में - ॐ
प्रथम कोष्ठ - 7 अर्घ्य, द्वितीय कोष्ठ - 5 अर्घ्य
तृतीय कोष्ठ - 7 अर्घ्य, चतुर्थ कोष्ठ - 9 अर्घ्य
पंचम कोष्ठ - 9 अर्घ्य
कुल - 35 अर्घ्य

रचयिता :
प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

स्तवन

महामंत्र नवकार की, नव कोटि के साथ।
ध्यान जाप कर पूजते, झुका रहे हैं माथ।।

(तांटक छन्द)

छियालिस मूलगुणों के धारी, पाने वाले केवलज्ञान।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर, तीन लोक में रहे महान।।
दिव्य देशना जिनकी पावन, भविजीवों की करुणाकार।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाली, अतिशय कारी अपरम्पार।।1।।
अष्ट कर्म का नाश करें, जो होते सिद्ध शिला के ईश।
अष्ट गुणों के धारी पावन, सिद्धों के पद धरते शीश।।
दर्शज्ञान चारित्र सुतप शुभ, पालन करते वीर्याचार।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, पावन परमेष्ठी आचार्य।।2।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह, के धारी उपाध्याय ऋषिराज।
सम्यकज्ञान प्राप्ति हेत, हम उपाध्याय पद पूजें आज।।
विषया के त्यागी साधू, हों आरम्भ परिग्रह हीन।
ज्ञान ध्यानलय लीन यतीश्वर, होते सम्यकज्ञान प्रवीण।।3।।
णमोकार परमेष्ठी वाचक, मंत्र जहाँ में अतिशय कार।
भव्य जीव ध्याते हैं जिनको, तीन योग से बारम्बार।।
परमेष्ठी को ध्याने वाले, प्राप्त करें शुभ पुण्य अतीव।
'विशद' ज्ञान को पाने वाले, धरते मोक्ष मार्ग की नीव।।4।।

दोहा - महिमा कारी मंत्र है, महामंत्र णवकार।
ध्यान जाप कर जीव सब, पावें सौख्य अपार।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

लघु णमोकार मंत्र विधान

स्थापना

दोहा- काल अनादि अनन्त है, महामंत्र नवकार।
आह्वानन् करके हृदय, वंदन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चाल छन्द)

है जल की महिमा न्यारी, त्रय रोग निवारण कारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।1।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन है खुशबूकारी, भव रोग प्रणाशन कारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।2।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, अक्षत की पूजा भाई।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।3।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प लिए मनहारी, जो काम रोग विनिवारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, है क्षुधा रोग क्षय कारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।5।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है दीप प्रकाशन कारी, जो मोह महातम हारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।6।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है धूप दशांगी न्यारी, जो अष्ट कर्म क्षयकारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।7।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस लिए अघहारी, है मोक्ष सुपद कर्तारी।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।8।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
हम णमोकार को ध्याते, त्रियोग से महिमा गाते।।9।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा - शांति प्रदायक नीर है, कर्मों का क्षयकार।
विशद भाव से दे रहे, जिन पद शांतीधार।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा - पुष्पांजलि करके विशद, पाएँ शिव सोपान।
भाव सहित करते यहाँ, श्री जिन का गुणगान।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

णमो अरहंताणं

(चाल छन्द)

ण-बीज वर्ण तम नाशी, है केवल ज्ञान प्रकाशी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-बीज है मोक्ष प्रदायी, जो अनुपम शिव सुखदायी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अ-बीजाक्षर अविकारी, पद दायक मंगलकारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं 'अ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

र-बीज रम्य शुभकारी, रवि सम जो आभाकारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं 'र' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हं-बीज वर्ण को ध्याए, मन का कल्मष खो जाए।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं 'हं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ता है तामस परिहारी, अन्तश् का मोह निवारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं 'ता' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीज वर्ण मनहारी, जो राग द्वेष विनिवारी।
हम अरहंतों को ध्याते, नत सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो सिद्धाणं

ण-सद्श्रद्धान प्रदायी, मिथ्या तम नाशक भाई।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-मोह तिमिर विनशाए, जो भेद ज्ञान प्रगटाए।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सि-बीज है सिद्धि प्रदायी, जिसकी महिमा अतिशायी।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं 'सि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्धा-धर्म की धार बहाए, जो अतिशय शांति दिलाए।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिनको निज हृदय बसाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं 'द्धा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर शिवकारी, है दुर्गति पंथ निवारी।
हम परम सिद्ध को ध्याएँ, जिन को निज हृदय बसाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो आयरियाणं

ण-बीज है बोध प्रकाशी, अज्ञान महातम नाशी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।1।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-बीजाक्षर बतलाए, मौनी हो ध्यान लगाए।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।2।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आ-बीज है आनन्दकारी, पददायक जो अविकारी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।3।।

ॐ ह्रीं 'आ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

य-बीज रम्य अतिशायी, है पंचम ज्ञान प्रदायी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।4।।

ॐ ह्रीं 'य' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रि-बीजाक्षर शुभ जानो, पापों का नाशी मानो।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।5।।

ॐ ह्रीं 'रि' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या-बीज है शांतीकारी, इस जग में विस्मयकारी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।6।।

ॐ ह्रीं 'या' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-पाप पंक परिहारी, सद् संयम के आचारी।
आचार्य हैं पंचाचारी, जिनके पद ढोक हमारी।।7।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो उवज्झायाणं

(चौपाई)

ण-बीजाक्षर बोध प्रदायी, भवि जीवों को शिव सुखदायी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।1।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-है बीज वर्ण तमनाशी, अनुपम सम्यकज्ञान प्रकाशी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।2।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उ-है उत्तम मार्ग प्रदायी, जो है उभय लोक सुखदायी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।3।।

ॐ ह्रीं 'उ' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व-है बीज विरोध निवारी, तन मन में शुभ शांतीकारी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।4।।

ॐ ह्रीं 'व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्झा-बीजाक्षर लक्ष्य प्रदायी, जो पुरुषार्थ कराए भाई।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।5।।

ॐ ह्रीं 'ज्झा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

या-बीजाक्षर यत्न कराए, मुक्ती पथ की राह दिखाए।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।6।।

ॐ ह्रीं 'या' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-है बीज कर्म संहारी, ध्याने वाले हों शिवकारी।
उपाध्याय को जो भी ध्याते, प्राणी वे सद्ज्ञान जगाते।।7।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णमो लोए सव्वसाहूणं

ण-से अपने कर्म नशाएँ, ध्या के अजर अमर पद पाएँ।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं 'ण' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मो-है बीज वर्ण अतिशायी, भवि जीवों को मोक्ष प्रदायी।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं 'मो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लो-बीजाक्षर जग कल्याणी, जिसको ध्याते हैं सद्ज्ञानी।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं 'लो' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ए-एकत्व ध्यान करवाए, अन्य का जो परिहार कराए।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं 'ए' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स-संसार भावना कारी, तीन योग से हो अविकारी।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं 'स' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्व-बीजाक्षर बोध जगाए, पर का जो परिहार कराए।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं 'व्व' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सा-शुभ साधु समाधि दिलाए, अल्प समय में शिव पहुँचाए।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं 'सा' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हू-बीजाक्षर संवर कारी, कर्म निर्जरा कर शिवकारी।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं 'हू' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

णं-बीजाक्षर मद परिहारी, अशुचि देह चेतन चित्कारी।
साधू रत्नत्रय को ध्याएँ, जिनकी अतिशय महिमा गाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं 'णं' बीजाक्षराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षर पद मात्राएँ जानो, पैंतिस पाँच अट्ठावन मानो।
णमोकार को पूजें ध्याएँ, विशद जाप कर पुण्य कमाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं पंच त्रिंशत बीजाक्षर युत णमोकार महामन्त्राय नमः
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा - पूज्य अनादि अनन्त है, तीनों लोक त्रिकाल।
महामंत्र णमोकार की, गाते हैं जयमाल।।

(राधिका-छन्द)

णमोकार महामंत्र, जगत में भाई-2।
भवि जीवों को है, उभय लोक सुखदायी-2।
जो लाख चौरासी, मंत्रों का है राजा।
जिसको ध्याते हैं, सुर नर मुनि अधिराजा।।1।।
जो सर्व मंगलों में शुभ, प्रथम कहाए।
जग के सब मंगल जिसमें आन समाए।।
है सर्वश्रेष्ठ उत्तम, इस जग में भाई।
जो उभय लोक जीवों को, सौख्य प्रदायी।।2।।
शुभ तीन लोक में अनुपम, शरण कहाए।
ना अन्य शरण कोई भी, प्राणी पाए।।
अरहंत घातिया कर्मों, के है नाशी।
हैं अनन्त चतुष्टय धारी, ज्ञान प्रकाशी।।3।।
प्रभु दोष अठारह रहित, कहे अविनाशी।
हैं सिद्ध आठ गुण, धारी शिवपुर वासी।।
आचार्य लोक में गाए, पंचाचारी।
शुभ शिक्षा दीक्षा दाता, संयम धारी।।4।।

श्रुत अंग पूर्व के ज्ञाता, पाठक जानो।
मुनियों को ज्ञान प्रदायी, पावन मानो।।
हैं विषयाशा के त्यागी, मुनि अनगारी।
शुभ रत्नत्रय धर ज्ञान, ध्यान तप धारी।।5।।
सुन महामंत्र को श्वान, ऋषभ फण धारी।
गज अज आदिक पशु, हुए देव पद धारी।।
पैंतिस सोलह छह पंच, चार दो भाई।
इक अक्षर कृत जो ध्याएँ, मोक्ष प्रदायी।।6।।
पैंतिस अक्षर के पैंतिस, व्रत हों जानो।
पाँचे सातें नौमी, चौदस के मानो।।
शुभ महामंत्र यह विष का, अमृतकारी।
है ऋद्धि सिद्धि सौभाग्य, 'विशद' कर्तारी।।7।।

दोहा -महिमा जिसकी है अगम, गरिमा रही विशाल।
महामंत्र णवकार को, वन्दन करो त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं अनादि निधन पंचनमस्कार मन्त्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा - मंगल उत्तम है शरण, महामंत्र णवकार।
पूजें ध्याएँ जीव सब, जिसको बारम्बार।।

इत्याशीर्वादः

श्री णमोकार चालीसा

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हंतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव॥
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त॥

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया॥1॥
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी॥2॥
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो॥3॥
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे॥4॥
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी॥5॥
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥6॥
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।7॥
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए॥8॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए॥9॥
समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते॥10॥
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।11॥
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते॥12॥
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए॥13॥
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की शुभ भाई॥14॥

आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए॥15॥
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए॥16॥
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते॥17॥
पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए॥18॥
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले॥19॥
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते॥20॥
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी॥21१॥
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता॥22॥
ज्ञानाभ्यास करें अतिशायी, संतों को शिक्षा दें भाई॥23॥
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो॥24॥
रत्नत्रय धारी कहलाए, मुक्ती पथ के नेता गाए॥25॥
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधू होते हैं अनगारी॥26॥
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो॥27॥
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते॥28॥
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी॥29॥
पंचमहाव्रत धारी जानो, पंचसमितियाँ पाले मानो॥30॥
पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले॥31॥
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई॥32॥
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया॥33॥
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई॥34॥

सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया॥35॥
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी॥36॥
श्वानादिक पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए॥37॥
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए॥38॥
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए॥39॥
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
'विशद' गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ॥
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप॥

णमोकार मंत्र की आरती

(तर्ज : आज मंगलवार है...)

महामंत्र नवकार है, मुक्ती का यह द्वार है।
ध्यान जाप आरति कर प्राणी, होता भव से पार है।।
होता भव से पार है।। टेक।।
महामंत्र के पंच पदों में, परमेष्ठी को ध्याया है।
अर्हत् सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु गुण गाया है।।
महामंत्र नवकार..... ।। 1।।

मूलमंत्र अपराजित आदिक, मंत्रराज कई नाम रहे।
श्रेष्ठ अनादिऽनिधन मंत्र के, और अनेकों नाम कहे।।
महामंत्र नवकार.....।।2।।

महामंत्र को जपने वाले, अतिशय पुण्य कमाते हैं।
सुख शांति आनन्द प्राप्त कर, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
महामंत्र नवकार.....।।3।।

काल अनादी से जीवों ने, सत् श्रद्धान जगाया है।
महामंत्र का ध्यान जापकर, स्वर्ग मोक्ष पद पाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।4।।

सुनकर नाग नागिनी जिसको, पद्मावति धरणेन्द्र भये।
अंजन हुए निरंजन पढ़कर, अन्त समय में मोक्ष गये।।
महामंत्र नवकार.....।।5।।

प्रबल पुण्य के उदय से हमने, महामंत्र को पाया है।
अतिशय पुण्य कमाने का शुभ, हमने भाग्य जगाया है।।
महामंत्र नवकार.....।।6।।

महामंत्र का ध्यान जाप कर, आरति करने आए हैं।
'विशद' भाव का दीप जलाकर, आज यहाँ पर लाए हैं।।
महामंत्र नवकार.....।।7।।